वर्ष - 4

अंक - 19

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

संपादक - विराग शास्त्री, देवलाली

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

आध्यात्मिक, तात्विक,धार्मिक एवं नैतिक

बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

प्रकाशक

श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक

विराग शास्त्री, (जबलपुर), देवलाली

प्रबंध संपादक

श्रीमति स्वस्ति जैन, देवलाली

प्रकाशकीय प्रबंधक

श्री मनीष जैन 'मंगलम्', जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स

गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमसंरक्षक

श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई

श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा

संरक्षक

श्री आलोक जैन, कानपुर

श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय

"चहकती चेतना"

फ्लेट नं.210, न्यू कहान नगर सोसायटी

बेलतगांव रास्ता, लाम रोड, पो. देवलाली

जि. नासिक 422401 महा.

मो. 9373294684, 0253-2491044

e-mail - chehaktichetna@yahoo.com

सदस्यता शुल्क

400 रु. (तीन वर्ष हेतु)

एक प्रति 20 रु.

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप चहकती चेतना के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से "चहकती चेतना" के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।

पंजाब नेशनल बैंक,फुहारा चौक, जबलपुर

बचत खाता क.- 1937000101030106

1. सूची 1
2. कविता - आओ हम सब खेलें खेल 2
3. रक्षा बंधन कैसे मनायें 3
4. तीर्थक्षेत्र - पोन्नूर 4
5. वात्सल्य का पर्व-रक्षाबंधन 5-6
6. चंद्रगुप्त के सोलह स्वप्न 7-8
7. कविता-माँ-माँ ये तो बता 9
8. वो कौन थी 10-11
9. Good SMS 12
10. स्वाधीनता दिवस-हमारे कर्तव्य 13
11. भक्तामर 14-15
12. जाको राखे आयु कर्म 16
13. कर्म की विचित्रता-2 17-18
14. चाँद की यात्रा 19-20
15. जाको राखे आयु कर्म 21
16. लक्ष्मण विजय, मधु का वैराग्य 22-23
17. गेम - रास्ता बताओ 24
18. प्रेरक प्रसंग 25
19. समाचार कोना / आभार 26-27
20. आपके प्रश्न हमारे उत्तर 28
21. सुख दुख 29
22. अमेरिका में अंधविश्वास 30-31
23. गेम - परछाई 32
24. जन्मदिवस 33
25. पेंटिंग 34
26. कॉमिक्स 35-36

खेल - खेल - खेल

आओ हम सब खेलें खेल
इक इंजन बाकी सब रेल

छुक-छुक - छुक चले चलो
पाठशाला को चले चलो
ठहरो ताला खुला नहीं
सबके सब अब रुको यहीं।
आओ हम.....

छुक-छुक-छुक छुक चले चलो
मंदिरजी को चले चलो
रेल जायेगी कहीं नहीं
दर्शन कर लो अभी यहीं
आओ हम.....

छुक-छुक-छुक छुक चले चलो
जंगल - जंगल चले चलो
आचार्यश्री जब मिले कहीं
दीक्षा ले लो सभी यहीं
आओ हम.....

छुक-छुक-छुक छुक चले चलो
आत्म ध्यान में रमे चलो
मोक्ष महल में चले चलो
लौट के आना कभी नहीं।।
आओ हम.....

रक्षा बंधन
कैसे मनायें

रक्षा बंधन का दूसरा नाम वात्सल्य पर्व है। इस दिन विष्णु कुमार मुनिराज ने आचार्य अंकपन आदि सात सौ मुनियों की रक्षा की थी। परन्तु आज इसे भाई – बहन का पर्व माना जाने लगा है।

1. रक्षा बंधन के सात दिन पूर्व किसी विशेष प्रिय वस्तु का सात दिन तक खाने का त्याग कर दें।
2. प्रतिदिन "आचार्य अकंपन आदि सप्तशत मुनिवरेभ्यो नमः" का जाप करें।
3. प्रतिदिन सोने से पहले और उठने के बाद दिगम्बर मुनियों और उनकी कठिन साधना को याद कर उन्हें परोक्ष प्रणाम करें।
4. रक्षा बंधन के दिन प्रातः जल्दी उठकर आचार्य अंकपन आदि सातसौ मुनिराजों की पूजन करें।
5. जिनमंदिर में विधान, गोष्ठी का आयोजन करें अथवा यदि इस तरह के आयोजन में अवश्य सहभागिता करें।
5. प्रातः 11 बजे तक कुछ भी न खायें –पीयें। इसके बाद मुनिराजों के आहार हो गये होंगे इस भावना के साथ शुद्ध भोजन लें। यदि संभव हो सके तो किन्हीं विद्वान, साधर्मी, व्रती को बुलाकर उन्हें वात्सल्य से भोजन करायें।
6. जिनमंदिर के पुजारी और माली आदि सेवकों को यथा योग्य उपहार दें।
7. वात्सल्य का प्रतीक रक्षासूत्र माता–पिता, बहिन–भाई आदि सभी सम्बन्धियों और मित्रों को बांधे।
9. यदि बहिन भाई को राखी बांधती है तो बहिन रुपयों अथवा उपहार के साथ भाई को एक नियम अवश्य दिलायें। जैसे – रात्रि भोजन त्याग, आलू–प्याज आदि जमीकंद का त्याग, देवदर्शन आदि।
10. इस दिन विशेष रूप से संकल्प करें कि यदि जिनधर्म, मुनिराज, ज्ञानी अथवा साधर्मी पर कोई संकट आयेगा तो हम पूरी शक्ति के साथ उसे दूर करने का प्रयास करेंगे।

हमारे तीर्थ क्षेत्र

तीर्थधाम पोन्नूर

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई से लगभग 120 कि.मी. दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित तीर्थधाम पोन्नूर दिगम्बर जैन समाज के सर्वमान्य आचार्य कुन्दकुन्द देव की साधना स्थली के रूप विख्यात है। पोन्नूर में आचार्य कुन्दकुन्द के पूर्व भव के दो देव मित्र आये और अपनी विक्रिया से उन्हें विदेह क्षेत्र ले गये। वहाँ 8 दिवस तक निराहार रहकर आचार्य कुन्दकुन्द ने समवशरण में साक्षात् सीमंधर परमात्मा के दर्शन और वाणी सुनने का लाभ प्राप्त किया। आचार्य कुन्दकुन्द देव ने पोन्नूर तीर्थधाम के जंगलों में विहार करते हुये अपनी स्वानुभूत प्रसूत लेखनी से समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड़ और पंचास्तिकाय जैसे महान पंच परमागम की रचना की। आचार्य कुन्दकुन्द देव की चरण रज से पावन तीर्थधाम पोन्नूर का कण-कण वंदनीय है। दूर से नीले रंग का दिखाई देने के कारण नीलगिरि नाम से प्रसिद्ध इस पर्वत एक लघु मंदिर है जिसमें भगवान महावीर स्वामी की प्राचीन प्रतिमा एवं आचार्य के चरण चिन्ह विराजमान हैं। इसी पर्वत से आचार्य विदेहक्षेत्र गये थे और सीमंधर परमात्मा से आत्मा के रहस्यों की निधियाँ लेकर लौटे थे।

पर्वत की तलहटी में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर स्थापित है। जिसमें भव्य जिनमंदिर, धर्मशाला, आचार्य कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन, आचार्य कुन्दकुन्द देव की अत्यंत मनोरम झांकी, साहित्य केन्द्र, भोजनशाला आदि की समुचित व्यवस्था है। पोन्नूरमलै तीर्थ बैंगलोर से 210 किमी, पाण्डिचेरी से 88 किमी, वन्दवासी से 8 किमी और चेटपुट से 20 किमी की दूरी पर स्थित है।

तीर्थधाम पोन्नूर पहुँचने का पता- आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेन्टर, कुन्दकुन्द नगर, पोन्नूरमलै, वडक्कमवाडी, तह. वन्दवासी, जि.तिरुवण्णामलै 604505 तमिलनाडु फोन. 041836.291136, 321520

वात्सल्य का पर्व

रक्षा बंधन

बात उज्जैन नगर की है। तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के समय आचार्य अकम्पन और उनके साथ 700 मुनिराजों का संघ उज्जैन में आया। उस समय उज्जैन नगर के राजा श्रीवर्मा अपने चार मंत्रियों के साथ मुनिराज के दर्शन के लिये आये। बलि, नमुचि, प्रहलाद, और बृहस्पति नाम के चारों मंत्रियों को जैन धर्म से द्वेष था। यह जानकर आचार्य अकंपन ने समस्त संघ को मौन रहने का आदेश दिया था। मुनिराजों को मौन देखकर मंत्रियों ने मुनिराजों की निंदा करते हुये कहा कि मुनिराज तो मूर्ख हैं इसलिये नहीं बोलते। लौटते समय मंत्रियों को संघ के एक मुनिराज श्रुतसागर से विवाद हो गया। श्रुत सागर मुनिराज ने अपने विशेष ज्ञान चारों मंत्रियों को हरा दिया। मंत्रियों ने अपने अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। श्रुतसागर मुनिराज के द्वारा सारी घटना सुनकर आचार्य अकंपन ने श्रुतसागर को विवाद वाली जगह पर ध्यान करने के लिये कहा। रात्रि में चारों मंत्रियों ने श्रुतसागर को मारने के लिये तलवार उठाई तो चारों के हाथ आकाश में स्थिर हो गये। राजा ने मंत्रियों के अपराध को सुनकर चारों को देश से बाहर निकाल दिया। वे चारों मंत्री हस्तिनापुर पहुँचकर चालाकी से राज्य के मंत्री बन गये। कुछ समय बाद आचार्य अकंपन

अपने संघ सहित हस्तिनापुर पहुँचे। तब चारों मंत्री ने अपने अपमान का बदला लेने का निश्चय किया। चारों मंत्रियों ने राजा से अपने पुराने वचन के बदले सात दिन के लिये राज्य मांगा। राजा ने अपने वचन के अनुसार सात दिन के लिये बलि को राजा बनाकर एकांतवास में चला गया। राज्य पाकर चारों मंत्रियों ने मुनिराजों पर अत्याचार करने प्रारंभ कर दिया। मुनिराजों के चारों ओर हड्डियाँ, मांस फैला दिया, हरी घास उगा दी और चारों और लकड़ी के ढ़ेर लगाकर आग लगवा दी।

यह उपसर्ग देखकर एक क्षुल्लक मुनिराज ने विष्णुकुमार मुनिराज से इस संकट को दूर करने का निवेदन किया। विष्णुकुमार मुनिराज को विक्रिया ऋद्धि प्राप्त थी जिससे वे अपने शरीर का आकार छोटा-बड़ा कर सकते थे। विष्णुकुमार ने अपना मुनिपद छोड़कर अपनी ऋद्धि से वामन अर्थात् बौना आदमी का रूप बना लिया और बलि राजा के पास जाकर तीन कदम भूमि मांगी। राजा बलि ने कहा – हे ब्राह्मण! आप स्वयं अपने कदम से भूमि नापकर ले लें। इतना सुनकर विष्णुकुमार ने विशाल रूप धारण कर लिया और दो कदम में ही पूरी जमीन नाप ली और तीसरा कदम बलि की छाती पर रख दिया। यह देखकर पूरे नगर में हलचल मच गई और बलि आदि चारों मंत्रियों ने विष्णुकुमार से क्षमा मांगकर जैन धर्म स्वीकार कर लिया। विष्णुकुमार ने प्रायश्चित कर पुनः मुनि दीक्षा ली।

मुनिराजों की रक्षा का दिन होने से इस दिन को वात्सल्य पर्व अर्थात् रक्षाबंधन पर्व के रूप में मनाया जाने लगा।

सम्राट चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न और उनका फल

आज से लगभग 2300 वर्ष पूर्व पवित्र भारत देश में चन्द्रगुप्त नाम के एक महान सम्राट हुये। उन्होंने एक रात्रि में सोलह आश्चर्यजनक स्वप्न देखे। जो कि आज सत्य सिद्ध हो रहे हैं। जानिये उन स्वप्नों और उनके फल को –

1. सूर्य का अस्त होना

फल – अशुभ पंचम काल में ग्यारह अंग का श्रुत का ज्ञान कम हो जायेगा।

2. कल्पवृक्ष की शाखा का टूटना

फल – आगे कोई भी राजा जिनेन्द्रभगवान के कहा हुआ संयम ग्रहण नहीं करेगा।

3. चलनी के समान छिद्र वाला चंद्रमा का उदय।

फल – पंचम काल में जैन मत के अनेक भेद होंगे।

4. बारह फण वाला सर्प

फल – बारह वर्ष का भयंकर अकाल होगा। (यह अकाल 800 वर्ष पूर्व हो चुका है)

5. पीछे लौटता हुआ देवता का विमान

फल – पंचम काल में कोई देवता, विद्याधर एवं चारण मुनि नहीं आयेंगे।

6. गंदे स्थान पर कमल का उत्पन्न होना

फल – अधिकांश हीन जाति के लोग ही जिनधर्म को धारण करेंगे परन्तु क्षत्रिय आदि उच्च कुल के नहीं।

7. नृत्य करता हुआ भूतों का परिवार

फल – मनुष्य जिनेन्द्र भगवान को छोड़कर व्यंतर देवों की अधिक श्रद्धा करेंगे।

8. खद्योत का प्रकाश

फल – जिन धर्म कुछ ही स्थानों पर होगा।

9. एक सरोवर जो कि बीच में सूखा और किनारों पर भरा हुआ

फल – जिस स्थान पर तीर्थंकरों के कल्याणक हुये ऐसे तीर्थ स्थानों पर जिनधर्म नाश को प्राप्त होगा।

10. सोने के पात्र में खीर खाता हुआ कुत्ता

फल – धन का उपभोग नीच पुरुष करेंगे, धन का उपभोग करने वाले उत्तम पुरुष कम होंगे।

11. हाथी पर चढ़ा हुआ बन्दर

फल – नीच कुल में पैदा होने वाले लोग राज्य करेंगे। क्षत्रियों को राज्य प्राप्त नहीं होगा।

12. समुद्र द्वारा मर्यादा छोड़ना

फल – राजा अन्याय करने वाले होंगे।

13. छोटे बछड़े जिनके ऊपर बहुत बोझ रखा हुआ है

फल – अधिकांश युवा लोग ही संयम ग्रहण करेंगे, कुछ वृद्धजन ही संयम ग्रहण करेंगे।

14. ऊँट पर बैठा हुआ राजकुमार

फल – राजा निर्मल मार्ग छोड़कर हिंसा का मार्ग अपनायेंगे।

15. धूल से ढका हुआ रत्नों का थाल

फल – निर्ग्रन्थ मुनिराज भी एक दूसरे की निंदा करेंगे।

16. काले हाथियों का युद्ध

फल – पंचम काल में पानी समय पर नहीं बरसेगा। कहीं अकाल होगा और कहीं बाढ़ आयेगी।

माँ माँ ये तो बता, पहले प्रभु जी कौन थे

पहले प्रभुजी बच्चे थे, तेरे जैसे सच्चे थे - 2
प्रभुजी पहले बच्चे थे, जैसे आज मैं बच्चा हूँ
पर प्रभुजी हो गये सुखी, मैं क्यों रहता यहाँ दुःखी
प्रभु ने जाना आत्मा, हो गये वे परमात्मा - 2
तुम भी जानो आत्मा, बन जाना परमात्मा।
समझ गया माँ तेरी शिक्षा, सुन लो माँ अब लूँगा दीक्षा।
मुझे न जानो तुम बच्चा, करता वादा मैं सच्चा।
निज में दृष्टि जोड़ के, मोह भाव को छोड़ के।
जाऊँ मुक्ति में दौड़ के, जाऊँ मुक्ति में दौड़ के,

– ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियांधाना

जिनवाणी का संदेश

आशी बोली दीपक भाई जिनवाणी अपनी है माई।
चार अनुयोग प्यारे, द्वादश अंग न्यारे।
अब न रहे मोह कोई।। 1 ।।
जिनवाणी सुनने जाना, भेदज्ञान को अपनाना।
तत्वचर्चा हमको है भाई।। ।। 3 ।।
समय नियम प्रवचन पढ़ना, अष्टपाहुड़ पंच भजना।
मुझको मेरी कथा सुहाई ।। 3 ।।
देह जीव दोनों न्यारे, अशरण हैं सम्बन्धी सारे
ऐसी बात माँ ने बताई ।। 4 ।।

संजय जैन "सिद्धार्थी", ध्रुवधाम, बांसवाड़ा राज.

वह कौन थी ?

01. वह कौन सी नारी थी जिनने 6 अगस्त 1934 को सोलापुर के तिलक चौक में तिरंगा फहराया और जेल चली गई ?

– श्रीमति राजमति पाटिल।

02. वह कौन थीं जो हनुमान की माताजी थीं ?

– अंजना (सती)।

03. वह कौन थी जिसने अपनी छोटी बहिन से आर्यिका दीक्षा ली थी ?

– चेलना रानी।

04. वह कौन थी जो रावण की पुत्री थी ?

– कृत चित्रा।

05. वह कौन थी जिसने अपनी 65000 पीढ़ियाँ देखीं थीं ?

– मरूदेवी। (आदिनाथ की माता)

06. वह कौन थी जिसे अजगर निगल गया था और उसने अजगर को अभयदान दिया था ?

– अनंगसरा।

07. वह कौन थी जिसने कहा था कि "यदि मैंने स्वप्न में भी किसी पर पुरुष का ध्यान किया हो तो हे अग्नि! मुझे जला देना।"

– सीता सती।

08. वह कौन थी जो शांतिनाथ भगवान के समवशरण में प्रमुख आर्यिका थी ?

– हरिषेणा।

09. वह कौन थी जिससे लक्ष्मण ने कहा था कि यदि मैं बारह वर्ष में लौटकर न आऊँ तो मुझे रात्रि भोजन का पाप लगे ?

– वनमाला। (लक्ष्मण की पत्नी)

10. वह कौन थी जिन्होंने सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया जिसके दण्ड में उसे लगभग 19 माह तक जबलपुर में जेल में बिताना पड़े ?

– श्रीमति नन्हीं बाई जैन।

11. वह कौन थी जिनके चरण स्पर्श से नगर का द्वार खुल गया था ?

– सती मनोरमा।

12. वह कौन थी जो अंधी न होने पर भी अपने पति के अंधे होने के कारण अपनी आखों में पट्टी बांधती थी ?

– गांधारी। (धृतराष्ट्र की पत्नी)

13. वह कौन थी जिनकी प्रेरणा से गोम्टेश्वर बाहुबली की विशाल प्रतिमा बनी ?

– माता कालल देवी।

प्रेरक प्रसंग

तीर्थंकर चन्द्रप्रभ अपने पूर्वभव में एक राजकुमार थे। एक दिन उन्होंने देखा कि सामने के एक तालाब में कमल को देखकर एक हाथी उसे तोड़ने घुसा और घुसते ही वह कीचड़ में फंस गया। वह ज्यों – ज्यों निकलने का प्रयास करता वैसे ही वह और फंसता जाता था, आखिर वह उसमें से नहीं निकल सका और कीचड़ में फंसकर मर गया। राजकुमार ने यह दृश्य देखकर विचार किया – यही इस संसारी जीवों की दशा है। यह जीव विद्वय भोगों में अपना सारा जीवन व्यर्थ गंवा देता है। यह विचारकर राजकुमार ने आत्मसाधना के लिये दिगम्बर दीक्षा ले ली और जंगल की ओर विहार कर गये।

Good SMS

जिन्दगी की आधी परेशानियाँ ऐसे ही दूर हो जायेंगी अगर हम एक दूसरे के बारे में बोलने के बजाय एक दूसरे के लिये बोलना सीख लें।

किसी की बुराई तलाश करने वाले की मिसाल उस मक्खी की तरह है जो पूरा शरीर छोड़कर मात्र घाव पर बैठती है।

"सत्य" "अहिंसा" धर्म हमारा, "नवकार" हमारी शान है, "महावीर" जैसा नायक पाया, "जैन" हमारी पहचान है।

Every morning is the symbol of rebirth of life, So Forget All Yesterday's bad Movements, & Make today more Beautiful.....

Solve simple mistakes early before it leads to big problem. Bcoz we always slip from small stones and not from a mountain...

Mistake is a single part of life but relation is a book of life. So don't lose a full book for a single page.

When u start ur Day, keep 3 Words in ur pocket : TRY, TRUE & TRUST... TRY : for Batter future. TRUE : with ur work. TRUST : in dharma.

Wen Nails r growing we cut our Nails, Not Fingers... Similarly when Ego is rising, we should cut our Ego, not relations.

SMILE is the best credit card bcoz, 1. accepted world wide. 2. Auto reload 3. Unlimited usage. 4. No payment at all. 5. Make every 1 Happy... So keep Smiling.

Beautiful pictures r developd from negatives in a dark room. So anytime u see darkness in your life, it means god is developing a Beautiful future for u.

Naveen Jain, Jaipur

15 अगस्त स्वाधीनता दिवस

हमारे कर्तव्य

15 अगस्त 1947 को हमारा देश अंग्रेजों से स्वतंत्र हो गया। हम प्रतिवर्ष 15 अगस्त को आजादी की वर्षगांठ मनाते हैं। हम भी किसी न किसी प्रकार से देश की सेवा कर सकते हैं।

1. अपने देश की कभी बुराई न करें। हमारा देश विश्व का सबसे पवित्र देश है, इस भारत भूमि पर तीर्थंकर, मुनिराज, ज्ञानियों का जन्म हुआ। साथ ही हजारों महात्माओं और महापुरुषों ने अपने उपदेशों से इसका मान बढ़ाया है। बुराई देश में नहीं बल्कि देश के कुछ लोगों में है जिससे हमारा देश पतन की ओर जा रहा है।
2. हम आवश्यकता अनुसार बिजली, पानी आदि वस्तुओं का उपयोग करें। यह परोक्ष रूप से देश का विकास है।
3. सरकारी संपत्ति जैसे रेल, बस, सड़क, आदि का नुकसान न करें। यह हमारा स्वयं का नुकसान है।
4. वृक्षारोपण करके स्वस्थ भारत में अपना छोटा योगदान दें।
5. भ्रष्टाचार की निन्दा करें। भ्रष्टाचार को रोकने में सहयोग करें।
6. कभी अनीति करने वाले, अन्याय करने वाले, भ्रष्टचारियों की प्रशंसा न करें। यह देश का अपमान है।

भक्तामर स्त्रोत

भक्तामर स्त्रोत के सोलह छंदों का हिन्दी एवं अंग्रेजी अनुवाद आप पहले के अंकों में पढ़ चुके है अब आगे ...

17

राहू तुझको ग्रस नहिं सकता अस्त कभी तू होता नहीं।
नभ में आच्छादित मेघों से तब प्रभाव भी रुकता नहीं।
एक साथ करती है रोशन छबि तेरी तीनों संसार।
सूर्य पहुँच तुझको नहीं सकता महिमा तेरी अपरम्पार।।

Thou canst never set in the clouds,
Rahu cannot swallow thee,
Lluminest the universe,
Sun cannot compete with thee.

18

सदा उदय रह मोह महातम को हरता है तब मुख चन्द्र।
राहु अथवा मेघ कोई ढक सकता नहीं तुझको जिनचन्द्र।
शुभ्र कान्ति सतत बरसाता तब मुख कमल अनल्प कान्त।
तीन लोक में व्याप्त उजाला है तेरा हे चन्द्रकान्त।।

Ever rising, Ever shining,
Killest darkness of false love,
Resplendent, lotus-like thy face,
Captivates the world moon - like.

19

अन्धकार जब तीन जगत का मुख शशि से तेरे ही दूर।
रात में चन्दा रवि का दिन से धंधा क्या है होवे दूर।
धान जाये जब पक बिन नीरा जग में पूर्णतया परमेश।
काम ही क्या फिर जल से लदी घन घोर घटा का हे योगेश।।

What for sun and moon are, my lord,
When thy moon- like face kills gloom,
When Paddy ripens of itself,
No use, clouds are in the sky.

20

सम्यक निर्मल ज्ञान ज्योति जो तुझसे सोहती ज्ञानाधार।
कभी स्वप्न में भी ना देखी अन्य देव ने गुण आगार।
कान्ति मनोहर अनुपम छबि जैसी हीरे में सोहती है।
कंच रंक में ऐसी आभा रंच मात्र न होती है।।

Knowledge, that subsists in thee, Lord,
Harihar have not seen in dream,
Brillance, that is found in jewels,
Can never exist in glass.

21

देख प्रसन्न हु अन्य देव को अनुपम लाभ हुआ है एक।
उससे हो गई अरूचि और संतोषित मन है तुझको देख।
हे प्रभु तव दर्शन से तुझको लाभ हुआ है क्या।
भव-भव फिर जाऊँ न मिलेगा मनहारी कोई तुझसा।।

Glad, that hari I have beheld,
Now, my heart is thine alone,
But what use having seen thee, Lord,
That none else, now I can love.

22

मातायें करती हैं निशदिन यों तो पैदा पुत्र अनेक।
परन्तु प्रसूता तुझसा ना सुत तीनों जग में एक।
दशों दिशायें यों तो जगमग करती हैं तारों से नाथ।
पूर्व दिशा ही से उगता सूर्य सहस्त्र किरण हे नाथ।।

Countless women give birth to scns,
But not even one like thee,
Shine stars in all the directions,
But sun rises in the East.

शेष अगले अंक में

जाको राखे आयु कर्म मार सके न कोई

जिसकी आयु शेष है उसे इन्द्र, अहमिन्द्र और सम्राट भी नहीं मार सकते। इसका उदाहरण यह बच्चा। इसका नाम जितेश लोधी है। यह मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के पारस नगर का रहने वाला है। इसे बहुत दिन से पीठ में बहुत दर्द हो रहा था। बार- बार दर्द होने पर भोपाल के डॉ.जे.पी. पालीवाल ने इस दर्द का कारण जानने के लिये उसका एक्स-रे किया तो एक्स-रे में पीठ में एक छह इंच का चाकू का देखकर आश्चर्यचकित रह गये। यह चाकू दिल से मात्र दो इंच की दूरी पर था। तीन डॉक्टरों के दल ने ऑपरेशन कर चाकू को बाहर निकाला। जितेश के बारे पूछने पर उसके पिता श्री भैरों सिंह ने बताया कि लगभग डेढ़ माह पहले घर की एक आलमारी की सफाई करते समय जितेश का पैर फिसल गया था जिससे उसकी पीठ में चोट आई थी और खून बहने लगा था। यह देखकर उसे तुरंत एक प्राइवेट अस्पताल में ले गये थे। वहाँ के डॉक्टर ने खून साफ करके तीन टांके लगाकर कुछ दवाईयाँ खाने के लिये दे दी थीं। जख्म सूखने के बाद उसे पीठ में दर्द होने लगा। वास्तव में उसके गिरने पर सब्जी काटने वाला एक चाकू उसकी पीठ में घुस गया था और उठने पर चाकू आधा टूटकर पीठ के अंदर ही रह गया।

दूसरी घटना दिल्ली की है। दिल्ली के के. एम.ई. हास्पिटल में अरूणा शानबाग नाम की एक औरत पिछले 37 वर्षों से कोमा की हालत में भर्ती है। (कोमा अर्थात् वह जीवित तो है परन्तु न तो बोल सकती है, न चल सकती है। मात्र बिस्तर पर लेटे रहना। शरीर के किसी अंग में किसी प्रकार का हलन-चलन नहीं होना।)

शेष पेज नं.21 पर

कर्म उदय की विचित्रता. २

जीव जैसे कर्म करता है वैसा फल उसे निश्चय ही भोगना पड़ता है। देखिये पूर्व में किये गये पाप के फल में जीव को कितनी प्रतिकूलतायें भोगना पड़ती हैं। सावधान! पाप से बचिये वरना हमारा कल भी ऐसा होगा !

01. इसके चेहरे को देखिये कितना भयानक।

02. इसकी उम्र है मात्र 8 वर्ष। एक ऐसी बीमारी जिसमें उम्र तो कम होती है परंतु शरीर का विकास बुढ़ापे जैसा।

03. ऐसा भयानक चेहरा। किस कर्म का फल है यह !

04. चार हाथ वाला यह तीन दिन का बालक।

05. टेढ़ी पीठ वाला व्यक्ति। इसके लिये हर काम करना बहुत मुश्किल है।

06. हे भगवान! इतनी बड़ी नाक।

07. 11 वर्ष की यह बच्ची। देखिये! कितने बाल हैं इसके चेहरे पर।

08. इतना बड़ा चेहरा। पाप से डरिये।

09. इनकी उम्र दो वर्ष पर चेहरा 50 वर्ष के व्यक्ति जैसा।

10. बिना चमड़ी के जन्मा बालक।

11. ट्री मेन के नाम से मशहूर यह व्यक्ति। शरीर तो इंसान के जैसा परंतु हाथ पेड़ की शाखाओं जैसे।

चांद की यात्रा - सच या झूठ ?

संपूर्ण विश्व के बच्चों को चंद्रमा के बारे में एक बात जरूर पढ़ाई जाती है कि 20 जुलाई 1969 को अमेरिका के एक अपोलो 11 यान ने चांद पर पहली बार कदम रखा। चांद पर सबसे पहले कदम रखने का सौभाग्य नील आर्म्सस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन को मिला। 1969 से 1971 तक 41 माह में 6 बार चांद की यात्रा की गई। भारत के राकेश शर्मा ने 1989 में चांद की यात्रा की। आज विश्व के अनेक वैज्ञानिक चांद के रहस्यों को खोज करने में जुटे हुये हैं। वहीं अनेक

वैज्ञानिकों ने चंद्रमा की यात्रा को झूठ बताया है। इन वैज्ञानिकों ने इसके अनेक कारण बताये हैं तथा कुछ प्रश्न ऐसे हैं जिनका उत्तर अमेरिका आज तक नहीं दे पाया। इनमें एक वैज्ञानिक सी.एस.आई.आर के आर.के रावले भी हैं। 2009 में चंद्रमा के यात्रा के सम्बन्ध में एक सर्वे कराया गया जिसमें 25 प्रतिशत लोगों ने इस यात्रा को झूठी कहानी बताया। कुछ लोग तो यह मानते हैं कि अमेरिका ने लोगों को मूर्ख बनाने के लिये किसी स्टूडियो में चांद का सेट लगाकर ये फोटो खींचा है। आइये हम जानते हैं कि किन

कारणों से चंद्रमा की यात्रा पर प्रश्न चिन्ह लग गया है -

1. चांद पर दिन में तापमान 137 डिग्री होता है तो वीडियो की फिल्म क्यों नहीं जली ?

2. चांद पर पानी नहीं है परन्तु जो फोटो यात्रा के समय लिये गये उनमें मिट्टी में पैर के निशान हैं। बिना नमी के निशान कैसे बन गये ?

3. यदि जूते के निशान बन सकते हैं तो विमान उतरने से कोई गढ्ढा क्यों नही बना ? विमान तो कई टन का होता है।

4. 1972 के बाद दोबारा चांद पर क्यों नहीं गये ?

5. चांद पर हवा नहीं है तो फिर फोटो में झंडा कैसे लहरा रहा है ?

6. चांद की पहली यात्रा के फोटो में तीन ओर से प्रकाश आ रहा है जबकि चांद पर प्रकाश ही नहीं है तो फिर प्रकाश कैसे ?

ये प्रश्न आपके विचार के लिये हैं सच या झूठ का निर्णय आपको करना है।

सदस्यगण ध्यान दें

जिन सदस्यों की सदस्यता के तीन वर्ष पूर्ण हो गये वे कृपया अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र भेजें दें अन्यथा उन्हें आगामी अंक भेजना संभव नहीं हो पायेगा। सदस्यता शुल्क 400/-रू. आप मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं अथवा "चहकती चेतना" के नाम से अपने नगर में पंजाब नेशनल बैंक की फुहारा चौक, जबलपुर शाखा में खाता क्रमांक 1987000101030106 में जमा करके हमें सूचना करें और अपना पूरा पता वा सदस्यता क्रमांक मोबाइल नं. 9373294684 पर एस.एम.एस करें।

सन् 1983 में अरूणा शानबाग के.एम.ई. अस्पताल में नर्स के रूप में कार्य करती थी। अस्पताल के ही एक कर्मचारी के द्वारा किये गये गलत व्यवहार से वह सदमे में आ गई। पिछले 37 वर्षों से बिस्तर पर लेटी अरूणा की देखरेख अस्पताल की नर्स बहुत लगन से करती हैं। जीवन है तो कैसा ? इस असाधारण घटना को सुनकर यह सत्य ही लगता है – जिसकी आयु शेष है मार सके ना कोय।

घटना जयपुर के मालवीय नगर की है। अलवर निवासी 21 वर्षीय अमित यादव और गुड़गांव हरियाणा निवासी 19 वर्षीय सोनू यादव आपस में विवाह करना चाहते थे। परन्तु दोनों के घर वाले इस सम्बन्ध के लिये तैयार नहीं थे। अमित और सोनू आपस में बात करके 15 जून को दिल्ली आ गये। दोनों दो दिन तक दिल्ली रेल्वेस्टेशन के प्लेटफार्म पर ही रहे। 17 जून को रात्रि में वे ट्रेन से जयपुर आ गये और दोनों ने आत्महत्या करने का निर्णय किया। दोनों अंडरपास के पास पटरी पर लेट गये। दोनों के सिर और पैर पटरी पर थे। थोड़ी देर बाद सोनू ने अपने पैर और सिर को पटरी के बीच में कर लिया। लगभग 12 बजकर 30 मिनिट पर वहाँ से एक ट्रेन निकली जिससे अमित यादव के शरीर के टुकड़े हो गये और सोनू यादव को चोट तक नहीं आई। जब सोनू ने अपने को जीवित और अमित को मरा हुआ देखा वह वहीं सिर पर हाथ रखकर बैठ गई। बाद में पुलिस ने सोनू को उसके परिवार को सौंप दिया। सच ही कहा है – सम्राट महाबल सेनानी उस क्षण को टाल सकेगा ?अशरणमृत काया में हर्षित निज जीवन डाल सकेगा क्या ? नादानी ने अमित की जान ले ली और सोनू को जीवन भर पछताने के लिये छोड़ दिया। बिना विचार किये गये कार्य परिवार की बदनामी के कारण बनते हैं और आगामी भव के लिये महापाप बांध लेते हैं।

अब तो आप समझ गये होंगे जाको राखे आयु कर्म मार सके ना कोय

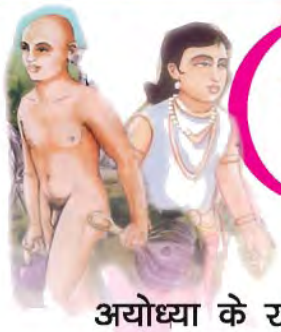

लक्ष्मण की विजय और मधु राजा का वैराग्य

अयोध्या के राजा राम राजसभा में अपने मंत्रियों के साथ वार्तालाप कर रहे थे। राजा राम विचार कर रहे थे कि मथुरा के राज्य पर किस तरह विजय प्राप्त की जाये। उस समय मथुरा पर रावण के दामाद राजा मधु का शासन था। राजा मधु को इन्द्र द्वारा त्रिशूल रत्न प्राप्त था और उनका पुत्र लवणार्णव भी महाशूरवीर था। तभी राम के छोटे भाई शत्रुघ्न बोले कि मैं मथुरा पर आक्रमण कर राजा मधु को परास्त करूँगा। तब राम ने कहा कि जब मधु के पास त्रिशूल रत्न न हो तभी उस पर आक्रमण करना। जिससे तुम आसानी से विजय प्राप्त करोगे।

शत्रुघ्न अपने भाई राम, लक्ष्मण और भरत से आशीर्वाद लेकर बड़ी सेना के साथ मथुरा पर विजय करने के लिये निकल गये। रास्ते में यमुना नदी के किनारे डेरा डाला। तब मंत्री महासूक्ष्म बुद्धि और सेनापति कृतांतवक्र परस्पर में विचार करने लगे कि इस महाभयंकर युद्ध में विजय कैसे मिलेगी? हमें इस कार्य में गुप्तचरों की सहायता लेनी चाहिये। मंत्री के आदेश गुप्तचरों ने सूचना दी कि राजा मधु भोग विलासी है और इस समय मथुरा से दूर उपवन में रानियों और पटरानी जयन्ती के साथ भोग विलास कर रहा है और उसके पास इस समय त्रिशूल रत्न नहीं है।

इस समय को सही समय जानकर शत्रुघ्न ने अपने मंत्रियों और सेनापित से विचार विमर्श कर मथुरा पर आक्रमण

कर दिया और बहुत जल्दी ही मथुरा पर अपना अधिकार कर लिया। प्रातःकाल ढ़ोल बजाकर पूरे मथुरा राज्य में घोषणा करवा दी कि मथुरा पर दशरथ पुत्र शत्रुघ्न ने अपना अधिकार कर लिया है। जब यह समाचार राजा मधु को प्राप्त हुआ तो क्रोधित होकर तुरन्त शत्रुघ्न पर आक्रमण करने के लिये तैयार हो गया। उस समय जो थोड़ी सेना थी उसके साथ शत्रुघ्न की सेना के साथ युद्ध करने लगा। राजा मधु का पुत्र लवाणार्णव सेनापति के द्वारा मारा गया। राजा मधु त्रिशूलरत्न के बिना स्वयं कमजोर अनुभव करने लगा फिर भी वह हाथी पर बैठकर युद्ध करता रहा। शत्रुघ्न और मधु के बीच घमासान युद्ध प्रारंभ हो गया। कमजोर राजा मधु शत्रुघ्न के प्रहारों से घायल हो गया। अपनी सेना के सैकड़ों सैनिकों को मरा हुआ देखकर राजा मधु विचार करने लगा कि मैंने कभी भी परिवार की बातों पर ध्यान नहीं दिया और भोग विलास में अपना समय बरबाद कर दिया। लेकिन अब मुझे आत्मकल्याण कर लेना चाहिये। उसे स्वयं के किये पापों के पश्चाताप होने लगा। मधु राजा ने हाथी पर बैठे ही समस्त वस्त्रों और आभूषण का त्याग कर दिया और केश लोंच करने लगे। शत्रुघ्न ने यह दृश्य देखा तो उसके भावों में परिवर्तन आ गया और उन्होंने तुरन्त युद्ध बन्द करने का आदेश दिया। युद्ध बन्द होते ही राजा शत्रुघ्न रथ से उतरकर पैदल ही राजा मधु की ओर बढ़ने लगे। राजा मधु के पास पहुँचकर उन्होंने मधु क्षमायाचना की। राजा मधु ने शांत परिणामों से बारह भावना का चिन्तवन करते हुये प्राण त्याग दिये और वे तीसरे स्वर्ग में देव हुये। राजा मधु के शरीर का पूरे सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। राजा शत्रुघ्न अपनी सेना सहित मथुरा नगरी लौट आये और जनता ने धूमधाम से अपने नये राजा का स्वागत किया।

4 Children flying kites
KNOCKED DOWN BY TRAIN

TIMES NEWS NETWORK

Jaipur: Panic, shock and confusion engulfed the entire Manoharpura slum area when they heard about the death of four children on Sunday afternoon. As they could not confirm their identity, family members from each house rushed out in search of their children. Most of the children were flying kites in the neighbourhood and their parents were out for work.

TRAGEDY ON TRACKS

"Bachcha bacha ya nahi, ye to subah hi pata chalega agar vo ghar lautega (My son is alive or not will be known only in the morning if he returns home)," said Golu's mother when people talked about the deaths on the railway tracks. Golu did not come but the bad news soon arrived. A cop from the Jawahar Circle police station approached her with neighbours and enquired for her husband. He said her husband and siblings would have to come to Jaipuria Hospital where the postmortem was being conducted. Golu's father Gopi and other relatives rushed to the mortuary for identification. On seeing his son's mutilated body he almost fell unconscious.

Family members of the children were called to the hospital for identification. Their sorrow doubled as they had to hire autos to take the bodies of the deceased after postmortem. No senior police officer or administrative officers, including the district collector and the area's SP arrived on the spot for investigation.

"My brother had gone around noon saying that he would return in a couple of hours and now I am carrying his dead body home," said Prakash Bairwa, brother of Ravi Bairwa, who also died in the accident.

- Bhupandra Bhayani
chennai

प्रेरक प्रसंग

दृढ़ निश्चय

लाल बहादुर शास्त्री बहुत बड़े राजनेता थे। वे गांधीजी के सिद्धांतों को मानने वाले समाज सेवक थे। वे दहेज प्रथा के सख्त विरोधी थी। उनका विवाह एक संपन्न परिवार की लड़की से होना तय हुआ। लड़की के पिता संपन्न होने के कारण बहुत बड़ी धनराशि दहेज में देना चाहते थे जिससे समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती। लेकिन शास्त्रीजी ने दहेज लेने से साफ मना कर दिया। उनके ससुर और समाज वालों ने दहेज लेने का बहुत आग्रह किया परन्तु शास्त्रीजी किसी की नहीं सुन रहे थे। बार – बार पूछने से शास्त्रीजी ने कहा कि अगर आप दहेज देना चाहते हैं तो मुझे मात्र दो चीजें दे दीजिये। एक चरखा और खादी का कपड़ा। लोग हैरान रह गये। फेरे के समय भी किसी ने उनसे दहेज लेने का आग्रह किया तो उन्हें गुस्सा आ गया वे बोले कि यदि आप लोगों को दहेज लेना–देना है तो आप कोई दूसरा दूल्हा ढूंढ लीजिये। शास्त्री जी के दृढ़ निश्चय के सामने सभी ने हार मान ली और शास्त्रीजी अपनी प्रतिज्ञा और सिद्धांतों का पालन करने में कामयाब हो गये।

अनोखा काम

एक जैन बन्धु नगर की नदी से पानी छानकर पी रहा था तभी राजा के सैनिक ने देख लिया और उसे पकड़कर राजा के सामने ले गया। यह सारी घटना बालक जिनसेन को मालूम हुई तो उसने उस जैन बन्धु की माता से इसका कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि हमारे राजा जैन धर्म के विरोधी हैं क्योंकि इनके गुरु शंकराचार्य ने पूरे राज्य में अपने धर्म का पालन करवाने का आदेश दिया है। पूरे राज्य में किसी को भी जैन साधर्मी को पानी छानने पर और दिन में भोजन करने पर दण्ड मिलता है। पूरे राज्य में जैन साधर्मी बहुत भयभीत हैं। तब जिनसेन ने कहा कि माँ "आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि दिगम्बर दीक्षा अंगीकार करूँगा और जिनशासन की प्रभावना करूँगा। साथ ही मैं यह भी प्रतिज्ञा लेता हूँ कि प्रतिदिन 100 व्यक्ति जैनधर्म में दीक्षित करूँगा। इस प्रतिज्ञा का पालन करते हुये जिनसेन आचार्य जिनसेन ने जैन धर्म की बहुत प्रभावना की।

नई वीडियो सी.डी. भगवन बनने जन्मे हम का लोकार्पण

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर द्वारा बाल वर्ग में जिनधर्म के संस्कारों के लिये किये जा रहे अद्वितीय प्रयास किये जा रहे हैं। इसके अंतर्गत अब तक 9 बाल वीडियो सी.डी. और दो धार्मिक गेम तैयार किये गये हैं। इसी क्रम में नवीन बाल कविताओं पर आधारित वीडियो सी.डी. ''भगवन बनने जन्मे हम'' का लोकार्पण हुआ। इस वीडियो सी.डी. का विमोचन देवलाली में शिविर के अवसर पर डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के कर कमलों से हुआ। इस वीडियो सी.डी. में मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, खान-पान से सम्बन्धी, पंच परमेष्ठी पर आधारित 16 कवितायें एनीमेशन में तैयार की गई हैं। इस सी.डी. के साथ इन्हीं कविताओं की रंगीन चित्रों वाली पुस्तक भी तैयार की गई है। इस कविताओं की रचना और वीडियो निर्देशन श्री विराग शास्त्री ने किया है।

अनेक बाल शिविर संपन्न

ग्रीष्मकालीन अवकाश में पूरे देश में बाल शिविरों का आयोजन वृहद स्तर पर किया गया। इन शिविरों में लगभग 250 विद्वानों ने देश के विभिन्न नगरों और उपनगरों में जाकर जैन धर्म के आधारभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराया साथ ही आचरण में शुद्धि सम्बन्धी जानकारी दी। ये शिविर देवलाली, जबलपुर, सोनगढ़, भिण्ड, बुंदेलखण्ड, भोपाल, इंदौर, रायसेन, हिंगोली, पंढरपुर, कोटा, द्रोणगिरि आदि स्थानों पर लगभग 235 स्थानों पर संपन्न हुये। इनमें पं.टोडरमल सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर, ध्रुवधाम बांसवाड़ा, मंगलायतन, मुमुक्षु आश्रम कोटा के विद्वानों द्वारा अध्यापन कार्य कराया गया। इन शिविरों में लगभग 15000 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इन शिविरों में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई, कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री दिलीपभाई वी. शाह जयपुर आदि का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

जबलपुर में जैनत्व आवासीय बाल संस्कार शिविर संपन्न

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 31 मई से 07 जून तक आयोजित इस संस्कार शिविर का उद्घाटन श्री नरेन्द्र कुमार जैन के द्वारा ध्वजारोहणपूर्वक हुआ। उद्घाटन सभा के मुख्य अतिथि फैडरेशन के मध्यप्रदेश प्रांत के अध्यक्ष श्री विजय बड़जात्या, इंदौर थे। इस शिविर में मुख्य आयोजक के रूप में श्री अशोक जैन दिगम्बर परिवार के साथ श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई और शास्त्री सुंगधी परिवार जबलपुर का सहयोग प्राप्त हुआ। इस शिविर में जबलपुर और आसपास के नगरों के लगभग 450 बालक – बालिकाओं ने सहभागिता की। इस शिविर में प्रातः योग और प्रार्थना, जिनेन्द्र पूजन और प्रशिक्षण के पश्चात् सुबह और दोपहर में पृथक – पृथक कक्षाओं के बाद सामूहिक कक्षा का संचालन किया गया।

सांयकालीन कार्यक्रमों में जिनेन्द्र भक्ति के बाद विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत संगीतमय कथा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रोजेक्टर पर बाल गीत वीडियो, कत्लखानों में होने वाले अत्याचार आदि का प्रदर्शन, प्रतिभा विकास की प्रतियोगितायें संचालित की गईं। 12 कक्षाओं के संचालन में सुदीप शास्त्री बरगी, आशीष शास्त्री टीकमगढ़, विवेक शास्त्री सागर, निपुण शास्त्री सरदार शहर, विशेष शास्त्री जयपुर, सुकुमाल शास्त्री नागपुर, श्रीमति स्वस्ति जैन देवलाली के साथ स्थानीय विद्वान श्री मनोज जैन, श्रेणिक जैन, श्री जिनेन्द्र जैन, श्रीमति कान्ति जैन, श्रीमति अलका जैन, श्रीमति पूजा जैन का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। सामूहिक कक्षा के साथ शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रमों में श्री विराग शास्त्री का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। सामूहिक कक्षाओं में गृहीत मिथ्यात्व, आचार- विचार, विनय, हमारे कर्तव्य, देश के विकास में हमारी भूमिका आदि विषयों का समावेश किया गया। श्रुत पंचमी के दिन जिनवाणी की विशेष आराधना की गई। जबलपुर जैन समाज की विभिन्न समितियों के पदाधिकारियों ने समय-समय पर पधारकर शिविर की गतिविधियों का निरीक्षण करते हुये इस कार्य की प्रसन्न हृदय से अनुमोदना की। यह शिविर जबलपुर मंडल के सभी सदस्यों के तन-मन-धन समर्पण के साथ फैडरेशन के युवा और समर्पित अध्यक्ष श्री संजय जैन और श्री अनुभव जैन, डॉ. मनोज जैन आदि समस्त सदस्यों के अथक परिश्रम से शिविर सफल रहा।

आभार

हैदराबाद निवासी श्री महेन्द्रभाई के पुत्र श्री नयन शास्त्री का शुभ विवाह दिनांक 18 मई को मुम्बई निवासी श्री नरेशभाई की पुत्री हिरल के साथ संपन्न हुआ। दोनों परिवारों की ओर से संस्था को इस अवसर पर 5000/- रू. की राशि प्राप्त हुई।

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न1. शाकाहार भी पेड़-पौधों से मिलता है, क्या इसमें हिंसा का पाप नहीं है ?

उत्तर – मांस खाने में महापाप है। शाकाहार में मांस जैसा दोष नहीं है।

प्रश्न2. क्या बिना नहाये जिनमंदिर जा सकते हैं ?

उत्तर– जिनमंदिर पवित्र स्थान है इसलिये जिनमंदिर नहाकर ही जाना चाहिये।

प्रश्न3. समवशरण की रचना कौन करता है ?

उत्तर – समवशरण की रचना इन्द्र की आज्ञा से कुबेर करता है।

प्रश्न4. तीर्थंकर वृक्ष की छाया के नीचे ही दीक्षा क्यों लेते हैं ?

उत्तर– वृक्ष की छाया थके हुये प्राणी को शांति और विश्राम देती है। अतः आत्मशांति पाने के प्रतीक के रूप में वृक्ष की छाया में दीक्षा लेते हैं।

प्रश्न5. तीर्थंकर के जन्माभिषेक के लिये देव कितनी देर में सुमेरू पर्वत पहुँच जाते हैं ?

उत्तर– देवों के पास विक्रिया ऋद्धि होती है इसलिये विचार आते ही वे सुमेरू पर्वत पहुँच जाते हैं।

प्रश्न 6. बलिराजा का मान घटाने के लिये मुनि विष्णुकुमार ने अपना पैर मानुषोत्तर पर्वत तक बढ़ाया था क्या वह मुनि का मान प्रदर्शन नहीं था ?

उत्तर – फल भावों का मिलता है। विष्णुकुमार मुनि का भाव धर्म रक्षा का था। मुनिराज को अभिमान नहीं होता।

प्रश्न7. पर्व का अर्थ क्या होता है ?

उत्तर– पर्व का अर्थ पोर है। जैसे गन्ने में पोर होती है जिसे बोने पर पुनः गन्ना पैदा हो जाता है इसी प्रकार पर्व से आत्म कल्याण की प्रेरणा मिलती है। नई जागृति आती है।

प्रश्न 8. क्या दही और बेसन की वस्तुयें खाने में दोष है ?

उत्तर – हाँ। दही के साथ दो दल वाले अनाज की वस्तुयें खाने से मुंह की लार मिलते ही असंख्यात जीव पैदा हो जाते हैं। इससे द्विदल सेवन नाम का महापाप होता है।

एक में सुख अनेक में दु:ख

मिथिला के राजा नमिराज अपनी एक हजार रानियों के साथ सुख पूर्वक रहा करते थे। एक बार उनके शरीर में भयंकर दाह उत्पन्न हुआ। उन्हें अपने शरीर में बहुत गर्मी का अनुभव होने लगा। चिकित्सकों ने उन्हें चंदन का लेप करने के लिये कहा। राजा नमि की रानियों ने अपने पति की सेवा का पुण्य स्वयं लेने का निर्णय किया। चंदन के लिये चंदन की लकड़ियाँ मंगाई गईं। सभी रानियाँ चंदन पीसने के लिये एक साथ बैठीं। हर रानी एक एक हाथ में लगभग 10 चूड़ियाँ पहनी हुई थीं। चंदन पीसते समय एक हजार रानियों के हाथों की लगभग 20 हजार चूड़ियों की एक साथ तीखी आवाज आने लगी। चूड़ियों की भंयकर आवाज सुनकर राजा नमि की पीड़ा और बढ़ गई। राजा की पीड़ा देखकर मंत्री तुरन्त समझ गया और उसने पटारानी तक यह समाचार पहुँचा दिया। यह सुनकर पटरानी ने आग्रह पर सभी रानियों ने अपने हाथ में सुहाग की एक चूड़ी छोड़कर सभी चूड़ियाँ उतार दीं और फिर से चंदन पीसने लगीं इससे चूड़ियों की आवाज आना बन्द हो गई।

राजा ने मंत्री से मंत्री से पूछा कि क्या मेरी रानियाँ चंदन घिसते – घिसते थक गई हैं ? तब मंत्री ने बताया – नहीं महाराज! चंदन तो घिसा जा रहा है परन्तु चूड़ियों की आवाज इसलिये नहीं सुनाई दे रही क्योंकि रानियों ने अपने हाथों में एक–एक चूड़ी रखकर शेष चूड़ियाँ हाथों से उतार दीं हैं। जिससे भयंकर आवाज से आपको परेशानी न हो।

यह सुनकर राजा नमि विचार करने लगे कि अनेक चूड़ियों से भयंकर आवाज होती है जो अशांति का कारण बनती है और एक चूड़ी में न आवाज, न ही अशांति। एकत्व में सुख है। यह विचार करते हुये राजा ने राज्य और परिवार छोड़कर मुनि बनने की भावना प्रगट की और अगले ही दिन वे मुनि दीक्षा लेकर जंगल में तप हेतु चले गये।

अमेरिका में भी अंधविश्वास
भगवान से मुलाकात

दुनिया के समस्त देशों का राजा कहा जाने वाला देश अमेरिका आज भी अंधविश्वास में जकड़ा हुआ है। यहाँ के केलिफोर्निया शहर के रांचो सांता फे में एक धार्मिक पंथ के 39 लोगों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली।

यह घटना सानडिएगो से 20 किमी दूर रांचा सांता फे नामक छोटे से नगर की है। यहाँ एक शानदार मकान में एक साथ 39 लाशें देखकर पुलिस आश्चर्य चकित रह गई। सभी मरने वालों के पलंग पर एक-एक सूटकेस रखा हुआ था और सभी में 5-5 लाख डॉलर की राशि थी। सभी लोगों ने काले रंग की पेन्ट और काले रंग के जूते पहने हुये थे। सभी के पास शराब की छोटी बोतल थी। सभी के पास एक परची मिली जिसमें आत्महत्या करने का तरीका लिखा था कि "पुडिंग या एपले सॉस लीजिये और उसे फेनोबारबिटल में मिलाकर एलकोहल के साथ पी जाइये और फिर तनाव मुक्त होकर लेट जाइये।"

मरने वालों में 21 महिलायें और 18 पुरुष थे। इनकी उम्र 18 वर्ष से 72 वर्ष के बीच की थी। इनमें अधिकांश युवा और बहुत पढ़े लिखे थे। मकान में बहुत सारा भोजन और कई कंम्प्यूटर थे। पुलिस जांच में प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात हुआ कि ये सभी हेवंस गेट नामक धार्मिक पंथ के सदस्य थे। इस पंथ के गुरू संगीत प्रोफेसर एप्पल व्हाइट ने 1970 में इस पंथ की स्थापना की और इनका मानना है कि हेल बोप पुच्छल तारे की पूंछ में प्रभु यीशु विराजमान हैं और आत्महत्या करने वाले को यीशु से मिलने का अवसर प्राप्त होता है। इस पंथ की अमेरिका के अनेक शहरों में शाखायें हैं। एक पत्र के अनुसार इन्होंने लिखा कि हम अपनी खुशी से यीशु से मिलने के लिये

आत्महत्या कर रहे हैं। भगवान से मिलने के अंधविश्वास ने इन युवा प्रतिभाशाली व्यक्तियों की जान ले ली।

आज भी धर्म प्रचारकों द्वारा भगवान से मिलन, यीशु बुला रहे हैं, स्वर्ग का रास्ता, प्रभु दर्शन के नाम पर लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ किया जा रहा है। आवश्यकता है स्वयं इनसे बचने की और अपनों को बचाने की।

आभार–सरिता, मासिक पत्रिका

ईमानदारी

पण्डित गोपालदासजी बरैया एक बहुत बड़े जैन विद्वान थे। वे हमेशा सच बोलते थे। एक बार वे अपने परिवार सहित अपने गांव मुरैना से मुम्बई जा रहे थे। टिकिट खरीदकर वे ट्रेन में बैठ गये। ट्रेन लगभग 6 घंटे का सफर कर चुकी थी। तभी उनकी पत्नी बोली– "अरे याद आया, आज अपना बेटा तीन वर्ष का हो गया है। इसका आज जन्मदिन है। पंडितजी को प्रसन्नता हुई। तभी उन्हें याद आया कि रेल में तीन वर्ष के बालक का आधा टिकिट लगता है। पंडितजी चिन्ता में पड़ गये। टिकिट के बारे में उन्हें कोई पूछने वाला नहीं था।

आखिर मुम्बई पहुँचकर पंडितजी सीधे स्टेशन पर टिकिट खिड़की पर पहुँचे और बोले कि मुझे यहाँ से मुरैना तक का आधा टिकिट दे दीजिये। मेरे पुत्र ने आज ही चौथे वर्ष में प्रवेश किया है। मैं उसका टिकिट पहले नहीं ले पाया था, अब दे दीजिये।

टिकिट देने वाला अधिकारी पण्डितजी की सत्यता देखकर आश्चर्यचकित रह गया। बात छोटी सी है परन्तु ईमानदारी के बड़े सिद्धांत को बताती है।

देखकर बताओ कि किस चीज की छाया बनने से रह गई है ?

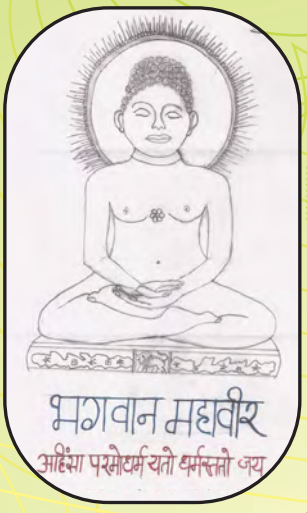

कु. सायली सचिन दोशी
हडपसर, पुणे

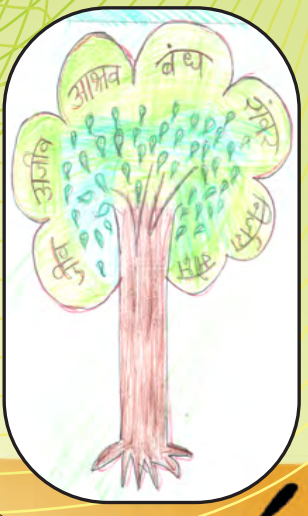

पूजा जैन, जबलपुर म.प्र.

छोटी सी चाह

भैया! हमारे पास केवल दो लंगोटी है एक पहनते हैं दूसरी धोकर सुखा देते हैं। परन्तु कल हमारी लंगोटी चूहे काट गये अब क्या करें!
महाराज जी चिन्ता न कीजिये। लंगोटी तो मैं ला देता हूं। रही चूहों की बात एक बिल्ली पाल ली जावे तो कैसा रहेगा।

भैया बिल्ली तो तुमने रखवा दी। अब इस बिल्ली को चाहिये प्रतिदिन दूध इसका प्रबन्ध कैसे हो?
इसके प्रबन्ध के लिये एक गाय ला देता हूं। फिर दूध का झंझट ही न रहेगा।

भैया गाय तो तुमने रखवा दी। परन्तु इसके घास का प्रबन्ध?
चिन्ता क्यों करते है महाराज। मेरा खेत पड़ा है। उसमें खेती कीजिये। घास की समस्या ही न रहेगी।

घास की झंझट तो मिट गई परन्तु एक परेशानी और आ खडी हुई। इसके साथ अनाज भी बहुत पैदा होता है। उसे कहां रखूं। उसका क्या करूं?
आप बेफिक्र रहिये। आपके लिये एक सुन्दर सा बडा सा मकान बनवाये देता हूं। ठाठ से रहिये। जो अनाज है वह बाजार में बेचिये। आपके पास धन भी हो जायेगा और सब सुख सुविधाएं भी।
अब तो पूरी मौज है भैया। परन्तु यह इतना बड़ा मकान और रहने वाला मैं अकेला क्याने को दौड़ता है यह मकान।
इसके लिये एक उपाय अच्छा है। आपकी शादी एक सुन्दर सी लड़की से कराये देते हैं। फिर आपको सुख ही सुख न कोई झगड़ा न टंटा!
COMIX
तुम्हारे कारण मुझे सभी सुख मिल गये। परन्तु यह देखो आज राजदरबार से नोटिस आया है। १० दिन पहले मेरी गाय पडोसी के खेत में घुस कर उसके खेती चर गई थी। उसने मेरे ऊपर मुकदमा कर दिया है। कल मुकदमे की तारीख है।
चिन्ता काहे को करते हो महाराज। एक अच्छा सा वकील किये लेते हैं। घबराइये नहीं। मैं भी आपके साथ चलूंगा।

क्या तुम्हारी गाय इनके खेत में घुसी? क्या उसने इनके खेत को नुकसान पहुंचाया? क्या तुम अपना अपराध स्वीकार करते हो?
श्रीमान जी! जो आप कह रहे हैं सत्य है। इनके खेत में मेरी गाय घुसी। उसने इनके खेत को नुकसान भी पहुंचाया। निसंदेह अपराध मेरा ही है। परन्तु...
परन्तु क्या?
इस सब झंझट की जड़ है यह लंगोटी। बस अब मैं इसका भी त्याग करता हूं। यह न रहेगी तो कोई झंझट भी रहेगा।
और लोगो ने देखा साधु नग्न दिगम्बर बनकर आत्म कल्याण के पथ पर बढ़ा चला जा रहा था। पं. धानतराय जी की लेखनी का कमाल तो देखिये क्या लिखा है उन्होंने आकिंचन्य के विषय में...
“फांस तनिक सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुख भाले”
समाप्त